“तू सिर होगा, पूँछ नहीं” — इसका वास्तविक अर्थ क्या है?

व्यवस्थाविवरण 28:13 में परमेश्वर अपने वाचा के लोगों से एक गम्भीर और महत्त्वपूर्ण प्रतिज्ञा करता है:

“यहोवा तुझे सिर बनाएगा, पूँछ नहीं; और तू ही ऊपर रहेगा, नीचे
न रहेगा—यदि तू अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञाओं को ध्यान
से माने, जिन्हें मैं आज तुझे देता हूँ, और उन्हें पूरा करने
में सावधान रहे।”
(व्यवस्थाविवरण 28:13)

“सिर होगा और पूँछ नहीं” — इसका क्या अर्थ है?

यह कथन एक रूपक है, जो व्यवस्थाविवरण 28 में दी गई आशीषों के संदर्भ में प्रयोग किया गया है। यहाँ परमेश्वर बताता है कि उसकी वाचा के प्रति आज्ञाकारिता का परिणाम क्या होता है।

“सिर” होना नेतृत्व, सम्मान, प्रभाव और परमेश्वर की विशेष कृपा को दर्शाता है।
इसके विपरीत, “पूँछ” होना अधीनता, अपमान और पिछड़ेपन का प्रतीक है।

इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग उसकी इच्छा

में चलकर उसकी महिमा प्रकट करें। जो लोग उसकी आज्ञा मानते हैं, वे ऊँचे किए जाते हैं; और जो लोग विद्रोह करते हैं, वे उसके परिणामों को भोगते हैं। यही सिद्धांत पूरी बाइबल में दिखाई देता है—आज्ञाकारिता से आशीष मिलती है, और अवज्ञा से शाप (देखें: व्यवस्थाविवरण 30:15–20)।

“सिर और पाँव” नहीं, बल्कि “सिर और पूँछ” क्यों?

यह ध्यान देने योग्य है कि पवित्रशास्त्र “सिर” के विपरीत “पाँव” नहीं कहता, बल्कि “पूँछ” कहता है। यह चित्र पशुओं की देह-रचना से लिया गया है, जिनके पास सिर भी होता है और पूँछ भी।

सिर दिशा देता है, निर्णय करता है और पोषण ग्रहण करता है—वह पूरे शरीर का नेतृत्व करता है।
पूँछ सबसे पीछे होती है, जहाँ शरीर जाता है वहीं वह चलती है। यह उस स्थान के पास होती है जहाँ मल-त्याग होता है, जो प्रतीकात्मक रूप से अशुद्ध, अवांछित और गौण बातों को दर्शाता है।

आत्मिक दृष्टि से, यह हमें दो प्रकार के लोगों का चित्र दिखाता है:

1. जो परमेश्वर का भय मानते और उसकी आज्ञा मानते हैं—वे अगुवे बनते हैं, परमेश्वर की उत्तम बातों के भागी होते हैं और संसार में प्रकाश बनते हैं (मत्ती 5:14–16)।
2. जो परमेश्वर के मार्गों को ठुकराते हैं—वे संसार के पीछे चलने वाले बन जाते हैं, लज्जा और अपमान के भागी होते हैं, और परमेश्वर की बुद्धि के बजाय

परिस्थितियों से संचालित होते हैं।

यीशु इस राज्य के सिद्धांत की पुष्टि करते हुए कहते हैं:

“पर तुम पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज
करो, तो ये सब वस्तुएँ तुम्हें मिल जाएँगी।”
(मत्ती 6:33)

वाचा का संदर्भ: आज्ञाकारिता की आशीषें और अवज्ञा के शाप

व्यवस्थाविवरण 28 का पूरा अध्याय वाचा की आशीषों (पद 1–14) और शापों (पद 15–68) का स्पष्ट विवरण देता है। “सिर होगा, पूँछ नहीं” की प्रतिज्ञा निःशर्त नहीं, बल्कि आज्ञाकारिता पर आधारित है।

अवज्ञा के परिणामों के विषय में आगे लिखा है:

“जो परदेशी तेरे बीच रहेगा, वह तुझसे ऊँचा ही ऊँचा उठता
जाएगा, और तू नीचे ही नीचे गिरता जाएगा। वह तुझे उधार देगा,
और तू उसे उधार न देगा; वह सिर होगा, और तू पूँछ।”

(व्यवस्थाविवरण 28:43–44)

यह उलटाव दर्शाता है कि जब लोग परमेश्वर की आज्ञाओं को हल्के में लेते हैं, तो वे केवल आशीष ही नहीं, बल्कि अपना स्थान, प्रभाव और आदर भी खो देते हैं।

आज के लिए आत्मिक शिक्षा

यद्यपि ये प्रतिज्ञाएँ मूल रूप से पुरानी वाचा के अंतर्गत इस्राएल को दी गई थीं, फिर भी इनके आत्मिक सिद्धांत आज भी मसीह यीशु में नई वाचा के अंतर्गत हमारे लिए सत्य हैं।

हमें आज्ञाकारिता में चलने के लिए बुलाया गया है—उद्धार पाने के लिए नहीं, बल्कि परिवर्तित जीवन के प्रमाण के रूप में:

“क्योंकि हम उसके बनाए हुए हैं, और मसीह यीशु में उन भले
कामों के लिए सृजे गए हैं जिन्हें परमेश्वर ने पहले से
ठहराया है।”
(इफिसियों 2:10)

“यदि तुम मुझसे प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे।” (यूहन्ना 14:15)

परमेश्वर चाहता है कि उसके लोग समाज में उदाहरण बनें—न्याय, सत्य और दया को प्रकट करने वाले। हमें पीछे रहने के लिए नहीं, बल्कि अगुवाई करने के लिए बुलाया गया है।

जैसा कि लिखा है:

“और इस संसार के समान न बनो, परन्तु अपने मन के नए हो जाने से रूपांतरित होते जाओ।”
(रोमियों 12:2)

जो लोग परमेश्वर के वचन के अनुसार जीवन जीते हैं, वे सिर के समान होते हैं—स्थिर, बुद्धिमान, फलवन्त और अनुग्रह से परिपूर्ण।

अपना स्थान चुनिए

“सिर” होना केवल पद या ऊँचाई की बात नहीं है, बल्कि परमेश्वर के अधीन जीवन जीने की बात है। यदि हम आशीष, उद्देश्य और आत्मिक प्रभाव का वह स्थान चाहते हैं, तो हमें परमेश्वर की आवाज़ सुननी होगी, उसके वचन पर चलना होगा और संसार की प्रणालियों व मूर्तियों को त्यागना होगा।

“आज मैं स्वर्ग और पृथ्वी को तुम्हारे विरुद्ध साक्षी
ठहराता हूँ कि मैंने तुम्हारे सामने जीवन और मृत्यु, आशीष
और शाप रख दिए हैं; इसलिए जीवन को चुन लो…”
(व्यवस्थाविवरण 30:19)

आइए हम जीवन चुनें।
आइए हम आज्ञाकारिता में चलें।
आइए हम सिर की तरह जिएँ—पूँछ की तरह नहीं।

प्रभु हमारी सहायता करे। आमीन।

Share on:
WhatsApp

Print this post